श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कालेज, गोण्डा
(सम्बद्ध– माँ पाटेश्वरी विश्वविद्यालय, बलरामपुर)

सूचना

दिनांक: 12/09/2026

महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों एवं छात्र–छात्राओं को सूचित किया जाता है कि भारतीय ज्ञान–परम्परा समिति की व्याख्यान श्रृंखला का प्रथम व्याख्यान दिनांक 15 सितम्बर, 2026 को अपराह्न 01 बजे ललिता शास्त्री सभागार में सम्पन्न होगा।

उक्त व्याख्यान में आप सभी की उपस्थिति अपेक्षित है।

प्रो. रवीन्द्र कुमार
प्राचार्य

(प्रो. मंशाराम वर्मा)
भारतीय ज्ञान परम्परा समिति

भारतीय ज्ञान परंपरा समिति : कार्यक्रम-रिपोर्ट - दिनांक : 15-09-2026

भारतीय ज्ञान परंपरा समिति के तत्वावधान में श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा (उ.प्र.) के ललिता शास्त्री सभागार में संस्कृत, हिंदी एवं शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा दिनांक 15 सितंबर, 2026 को 'प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता' विषय पर व्याख्यान-कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के बी.ए. प्रथम सेमेस्टर की छात्रा शुभी पाण्डेय के संचालन में संपन्न कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य प्रो. जितेन्द्र सिंह ने की, जबकि मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सूर्यपाल सिंह उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता डॉ. सूर्यपाल सिंह का परिचय डॉ. मुक्ता टंडन ने प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में डॉ. सूर्यपाल सिंह ने अपने दीर्घ शैक्षिक अनुभव के आधार पर प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था और उसकी आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने अनेक ऐतिहासिक एवं साहित्यिक उदाहरणों के माध्यम से भारतीय शिक्षा परंपरा की विशेषताओं को स्पष्ट किया।

उन्होंने वाचस्पति मिश्र की 'भामती' टीका का उदाहरण देते हुए एकाग्रता और ज्ञान-साधना की महत्ता पर प्रकाश डाला। गुरु-शिष्य परंपरा की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संबंध केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं था, बल्कि यह जीवन-दृष्टि और संस्कारों के निर्माण का माध्यम था। द्रुपद और द्रोणाचार्य के प्रसंग के माध्यम से उन्होंने शिक्षा के निजीकरण और शिक्षा में सामाजिक-आर्थिक विषमता की ऐतिहासिक प्रवृत्तियों की ओर भी संकेत किया।

मुख्य वक्ता डॉ. सूर्यपाल सिंह ने भारतीय वैज्ञानिक परंपरा का उल्लेख करते हुए आर्यभट्ट के पृथ्वी संबंधी वैज्ञानिक विचारों की चर्चा की और कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में वैज्ञानिक चिंतन की समृद्ध परंपरा रही है। उन्होंने आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की परीक्षा-केंद्रित प्रवृत्ति पर भी प्रश्न उठाया। राधाकृष्णन आयोग की अनुशंसाओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना होना चाहिए। उन्होंने चिंतन, मनन और निदिध्यासन को शिक्षा की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण आधार बताते हुए कहा कि वास्तविक शिक्षा वही है जो व्यक्ति की अंतर्निहित संभावनाओं को विकसित करे और उसे जीवन में पूर्णता की ओर अग्रसर करे। शिक्षा का लक्ष्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थी को ज्ञानवान, विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक बनाना है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रभारी प्राचार्य प्रो. जितेन्द्र सिंह ने भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए सुंदर आयोजन हेतु विभागों एवं समिति से जुड़े शिक्षकों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय शिक्षा पद्धति केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह विद्यार्थियों को सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए भी तैयार करती थी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में शिक्षा का अर्थ कहीं-कहीं परीक्षा और डिग्री प्राप्त करने तक सीमित होकर रह गया है। डिग्री प्राप्त करना कठिन नहीं, लेकिन वास्तविक ज्ञान अर्जित करना कहीं अधिक कठिन है।

बीज वक्तव्य में प्रो. जयशंकर तिवारी ने प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। विद्यार्थी के जीवन में ज्ञान के साथ-साथ सदाचार का भी समावेश होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारत को विश्वगुरु बनने से पहले विश्व का विद्यार्थी बनना होगा। सीखने की यह निरंतर प्रवृति ही भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवंतता का आधार रही है। उन्होंने कहा कि ज्ञानार्जन के प्रति जिज्ञासा और विनम्रता ही किसी समाज को वास्तविक अर्थों में समृद्ध बनाती है।

इस क्रम में विद्यार्थियों ने विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। स्वाति कौशल, आराध्या त्रिपाठी, हर्षिता सिंह, अंशिका मिश्रा, रितिक कनौजिया और अनूप सिंह ने अपने सारगर्भित एवं प्रेरणादायक वक्तव्यों के माध्यम से प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था की विशेषताओं और वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के अंत में भारतीय ज्ञान परंपरा समिति के संयोजक संस्कृत-विभागाध्यक्ष प्रो. मंशाराम वर्मा ने किया। उन्होंने इस अवसर पर सोलह संस्कारों की वैज्ञानिक प्रविधि पर चर्चा करते हुए शिक्षा को संस्कार से जोड़ने की बात कही। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत की शिक्षा मूल्यपरक थी। वर्तमान समय में उस ज्ञान-निधि से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के अनेक शिक्षक एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। इनमें मुख्य नियंता प्रो. संदीप श्रीवास्तव, प्राणि विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. अरविंद शर्मा, कार्यक्रम के सह संयोजक डॉ. ओम प्रकाश यादव, अंग्रेजी-विभागाध्यक्ष प्रो. वी. सीएच. एन. के. श्रीनिवास राव, वनस्पति विज्ञान-विभागाध्यक्ष डॉ. रेखा शर्मा डॉ. हरीश शुक्ला, डॉ. मनीषा पाल, डॉ. वंदना भारतीय, पिंकी शुक्ला, श्रवण यादव, गुड़िया तिवारी, अमित वर्मा, मनीष मोदनवाल, डॉली यादव, सुजीत सहित अन्य शिक्षक उपस्थित रहे। बीए एवं एमए के छात्र-छात्राओं ने भी उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यक्रम के डिजिटल संचालन एवं तकनीकी व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी राम भरोसे ने संभाली, जिसमें दीपू, शंकर दयाल आदि ने सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्वों को समकालीन शिक्षा व्यवस्था से जोड़ते हुए विद्यार्थियों में ज्ञान, चिंतन, संस्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना रहा। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

डॉ. ओम प्रकाश यादव
सह संयोजक

17/09/26

22/09/26

भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ - 2026-27

दिनाँक - 15-09-2026

व्याख्यान - विषय : प्राचीन भारत की शिक्षा-व्यवस्था एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता

नाम	पदनाम	फोन नं०	हस्ताक्षर
Dr. Om Prakash yad	Asst. Prof (Edu.)	9838344123	[illegible]
Manish Madand	Asst. Prof. (Edu.)	9838652267	[illegible]
Prof. [illegible] Ram Verma	Prof.	9451028536	[illegible]
[illegible]		9452521041	[illegible]
Prof Jitendra Singh	IQAC -coordinator	7007168781	[illegible]
Prof. Sandip Kumar	Prof. B.Ed	9451025670	[illegible]
Prof. Arvind Kumar Sharma	Professor, Zoology	9451040806	[illegible]
Dr. Manisha Pal	Assi Pro. (Edu)	9454796181	[illegible]
Dr. Vandana Bhartiya	Assistant Prof. (Eng)	7528045114	[illegible]
प्रो० जय शंकर तिवारी	प्रोफेसर, हिंदी	६६३६६३३६०१	[illegible]
डॉ० मुक्ता टंडन	Assi Prof (HINDI)	7800782000	Mukta
Prof. V.CH.N.K.S. Rao	Professor of English	9919123567	[illegible]
Dr Harish Kumar Shukla	Assist Prof. Education	9795283139	[illegible]
Arjun Kr Chaubey	Assi. Prof. Education	8707024569	[illegible]
Shrawan Kumar	Assi Prof. Sanskrit	9569192634	[illegible]
Dr. Baijnath Pal	Asst. Prof Pol. Sci	9450170055	[illegible]
Pinki Shukla	Asst Prof (Hindi)	9919643005	[illegible]
Gudiya Tiwari	Asst Prof (Hindi Depa)	6386205880	Gudiya
Muskan Singh	M.A. IIIrd semester	8738[illegible]54905	Mus
Shiksha Dubey	M.A. IIIrd semester	6387425433	Shik
Sakshi Shukla	M.A IIIrd Semester	9517495232	Sakshi
प्राची शुक्ला	M.A IIIrd Semester	9616779775	Prachi
दीपाली कनौजिया	M.A IIIrd Semester	8423158802	Deepali
सच्ची सिंह	M.A IIIrd Semester	6352348623	Sachchi Singh
Anju	B.A Ist semester	9838959535	Anju
Satyam Tiwari	B.A Ist semester	6387224893	Satyam
Priyanshi Dubey	B.A Ist semester	9219813823	Priyanshi
Chanda Vishwakarma	B.A Ist Semester	9670526889	Chanda
Mehnaz	B.A Ist Semester	8957514538	Mehnaz
Manshi	B.A Ist semester	8076818566	Manshi
Kavita	B.A Ist semester	9335590665	Kavita
Kashish Soni	B.A Ist semester	9506194074	Kashish Soni

Shalini Mishra	Ba I semester	9555424197	Shalini Mish..
Khushi Maurya	BA 1st semester	9918490910	Khushi Maurya
Ragini Devi	B.A. 1 Semester	8881681316	Ragini Devi
Madhu	B. A 1 Semester	9653058282	Madhu
Swati	BA I sem	9161669000	[illegible]
Shivani	B.A I Sem	8917032813	Shivani
Naziya	B.A I sem	6306345339	Naziya
Vidhi	B.A.I sem	8470823454	Vidhi
Zoya Khan	B.A. I sem	7307737653	Zoya Khan
Mohini	B.A I Sem	9702370874	Mohini
Komal Pathak	B.A V sem	6393584331	Komal
Madhu	B.A V sem	9170139805	Madhu
Kajal Pal	M.A I sem	9219040612	Kajal Pal
Pallvi Sen	M.A I Semester	6392234440	Pallvi
Kanchan Bharti	M A I Sem	9838115213	Kanchan
Nivedita	M.A I sem	9453077538	Nivedita
Pinky Singh	M.A I Sem	8081116109	Pinky
Reema Devi	B.A. V Sem	6386836877	Reema
Kajal Devi	B.A V sem	9956418566	Kajal
Tejeshwini Chauhan	B.A III Sem	9935136671	Tejeshwini
Pallavi Chauhan	B.A III Sem.	9935136671	Pallavi
Prachi Chaurasiya	B.A V sem	7355616262	Prachi
Miskat Hameed	B.A V sem	9565703736	Miskat
Nandni Kanojiya	B.A IIIrd Sem	6306721466	Nandni.
Pinki Rawat	B.A V sem	9648336514	Pinki Rawat
Anshika	B.A 1st	9838232900	Anshika
Priyanshi Mishra	B.A 1st Sem	8303370657	Priyanshi Mishra
Hariyali Dubey	B.A IIIrd Sem	7571913340	[illegible]
Minakshi Tiwari	B.A IIIrd sem	8052623634	[illegible]
Anchal	B.A IIIrd sem	9161723825	Anchal
Vijaylaxmi ojha	B.A I Sem	8874876475	V.L.O
Anjali Vishwakarma	M.A III Sem	9219884376	अंजली विश्वकर्मा
Aanchal	B.A I sem	8957835657	Aanchal
Priyanshi shukla	B.A I Sem	9838783513	Priyanshi

Avantika Singh	B.A 5th Sem	9628103837	Avantika
Anshika Mishra	M.A Ist Semester	8795754887	Anshika Mishra
Akanksha Mishra	B.A Ist sem	7379290660	Akanksha mishra
Humaira Rahman	M.A Ist Sem	9250028372	Humaira Rahman
Shalini	M.A Ist sem	7275921122	Shalini
Malini Tiwari	M.A Ist Sem	9454037560	Malini
Mamta Mishra	B.A 5th Sem	9369558736	Mamta
Astha Tripathi	B.A. 5th Sem.	9984411487	Astha
हर्षिता सिंह	एम०ए० तृतीय सेमेस्टर	6306832566	हर्षिता सिंह
पूजा देवी	एम० ए० प्रथम सेमेस्टर	9616251637	पूजा देवी
आंशिका चौबे	एम०ए० प्रथम सेमेस्टर	6390274760	आंशिका
गुड़िया देवी	एम० ए० प्रथम सेमेस्टर	9335798965	गुड़िया
Kajal Mishra	~~एम० ए० प्रथम सेमेस्टर~~ B.A	9214867410	Kajal Mishra
Komal Chaudhari	B.A 1st Sem	9506906432	Komal Chaudhari
Kanchan Tiwari	B.A 1st Sem	7985527172	Kanchan
Himanshi Jaiswal	B.A 1st sem	9838310100	Himanshi Jaiswal
Anchal Yadav	M.A 1st semester	8948165791	Anchal Yadav
Neha	B.A 1st Sem	9278169010	Neha
Soumya Pandey	B.com 1st Semester	9839347107	Pandey
Gunjan Pandey	B.A 1st Sem	9161947642	[illegible]
Karishma Verma	B.A 1st semester	9918833289	Karishma
Nisha Sharma	B.Sc Ist Semester	9452946007	Nisha
Manisha	B.A Ist Sem	8303714876	Manisha
Kajal Shukla	B.A I st Sem	9115254518	Shukla
Sameer Ahamad	B.A III Sem	9554089039	Sameer Ah.
Rajbabu Tiwari	B.A 1st Semester	7379007886	Raj Babu
Shashi Bhushan Sharan Singh	B.A 1st Semester	9305058004	Shashi
Sajid Ali	B.A 1st	9628618829	Sajid Ali
Sadanand Yadav	B.A 5th	9305316282	Sal
Prabhat Mishra	M.Com 1st Semester	9125924953	P. Mishra
Prashant Tiwari	B.Com 1st Semester	9839215514	[illegible]
Shobhit Mishra	B.A Ist	7318316462	Shobhit
Chandni	B.A IIIrd	9161639965	Chandni
Alka Devi	B.A 5th	7800638676	Alka Devi

प्राचीन भारत की शिक्षा-व्यवस्था एवं
आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता
GPS Map Camera
Gonda, Uttar Pradesh, भारत
567, Lbs, Jhanjhari Block, Gonda, Uttar Pradesh 271001, भारत
Lat 27.131627° Long 81.957244°
मंगलवार, 15/09/2026 02:05 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Gonda, Uttar Pradesh, भारत
567, Lbs, Jhanjhari Block, Gonda, Uttar Pradesh 271001, भारत
Lat 27.131584° Long 81.957192°
मंगलवार, 15/09/2026 01:21 PM GMT +05:30
Google

डिग्री से आगे ज्ञान और संस्कार जरूरी : डॉ. सूर्यपाल सिंह

● एलबीएस कॉलेज में प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर मंथन, गुरु-शिष्य परंपरा से लेकर वैज्ञानिक चिंतन तक पर हुई चर्चा

भारत कनेक्ट संवाददाता

गोंडा। लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज के ललिता शास्त्री सभागार में मंगलवार को भारतीय ज्ञान परंपरा समिति के तत्वावधान में ह्यप्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता डॉ. सूर्यपाल सिंह ने कहा कि प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूरा कराना या डिग्री दिलाना नहीं था, बल्कि ज्ञान, चरित्र निर्माण, चिंतन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना था। डॉ. सूर्यपाल सिंह ने कहा कि गुरु-शिष्य परंपरा में शिक्षा का संबंध जीवन-दृष्टि और संस्कारों से था। उन्होंने वाचस्पति मिश्र की भामती टीका सहित अनेक ऐतिहासिक एवं साहित्यिक प्रसंगों के माध्यम से एकाग्रता और ज्ञान-साधना की महत्ता समझाई। द्रुपद-द्रोणाचार्य प्रसंग के जरिए उन्होंने शिक्षा में सामाजिक-आर्थिक विषमता और उसके ऐतिहासिक प्रभावों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। आर्यभट्ट के वैज्ञानिक विचारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में वैज्ञानिक चिंतन की समृद्ध परंपरा रही है।उन्होंने आधुनिक शिक्षा की परीक्षा-केंद्रित प्रवृत्ति पर सवाल उठाते हुए कहा कि शिक्षा का लक्ष्य केवल परीक्षा पास कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थी की अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करना होना चाहिए। चिंतन, मनन और निदिध्यासन के माध्यम से विकसित ज्ञान ही व्यक्ति को विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक बनाता है। अध्यक्षीय संबोधन में प्रभारी प्राचार्य डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था विद्यार्थियों को बौद्धिक विकास के साथ सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के लिए भी तैयार करती थी। उन्होंने कहा कि आज डिग्री हासिल करना अपेक्षाकृत आसान है, लेकिन वास्तविक ज्ञान अर्जित करना चुनौतीपूर्ण है। बीज वक्तव्य में प्रो. जयशंकर तिवारी ने कहा कि विद्यार्थी के जीवन में ज्ञान के साथ सदाचार भी जरूरी है। भारत को विश्वगुरु बनने से पहले विश्व का विद्यार्थी बनने की भावना बनाए रखनी होगी। कार्यक्रम में स्वाति कौशल, आराध्या त्रिपाठी, हर्षिता सिंह, अंशिका मिश्रा, रितिक कनौजिया और अनूप सिंह ने भी विचार रखे। संयोजक एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. मंशाराम वर्मा ने आभार व्यक्त करते हुए सोलह संस्कारों की वैज्ञानिक प्रविधि पर प्रकाश डाला और शिक्षा को संस्कारों से जोड़ने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम में मुख्य नियंता प्रो. संदीप श्रीवास्तव, प्रो. अरविंद शर्मा, डॉ. ओम प्रकाश यादव, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. हरीश शुक्ला, डॉ. मनीषा पाल, डॉ. वंदना भारतीय समेत महाविद्यालय के शिक्षक एवं अतिथि मौजूद रहे।

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था आज भी प्रासंगिकः प्रो. सूर्यपाल सिंह

लोकभारती न्यूज ब्यूरो

गोंडा। श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज के ललिता शास्त्री सभागार में भारतीय ज्ञान परंपरा समिति के तत्वावधान में 'प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ. जितेंद्र सिंह ने की। मुख्य अतिथि एवं वक्ता प्रो. सूर्यपाल सिंह रहे। डॉ. मुक्ता टंडन ने मुख्य वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। प्रो. सूर्यपाल सिंह ने प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण कराना या डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थी की अंतर्निहित क्षमताओं का विकास कर उसे ज्ञानवान, विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक बनाना है। उन्होंने 'भामती' टीका का उदाहरण देते हुए एकाग्रता और ज्ञान-साधना के महत्व को रेखांकित किया। गुरु-शिष्य परंपरा को जीवन-दृष्टि एवं संस्कार निर्माण का माध्यम बताया।

उन्होंने आर्यभट्ट के वैज्ञानिक चिंतन का उल्लेख करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की समृद्ध परंपरा बताई। परीक्षा-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए राधाकृष्णन आयोग की अनुशंसाओं का उल्लेख किया। अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्राचीन शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों को सामाजिक उत्तरदायित्वों के लिए भी तैयार करती थी। बीज वक्तव्य में प्रो. जयशंकर तिवारी ने ज्ञान के साथ सदाचार को आवश्यक बताते हुए कहा कि भारत को विश्वगुरु बनने से पहले विश्व का विद्यार्थी बनना होगा।

कार्यक्रम में स्वाति कौशल, आराध्या त्रिपाठी, हर्षिता सिंह, अंशिका मिश्रा, रितिक कनौजिया और अनूप सिंह ने भी विचार रखे। संयोजक प्रो. मंशाराम वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए शिक्षा को संस्कार से जोड़ने पर बल दिया। इसी क्रम में बीसीए विभाग द्वारा इंजीनियर्स डे पर रीजनिंग, डिबगिंग एवं टेक्निकल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष इं. अभय द्विवेदी ने सर एम. विश्वेश्वरैया के योगदान पर प्रकाश डाला। प्राचार्य प्रो. आरके पांडेय ने विद्यार्थियों को तकनीकी कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित किया। प्रभारी प्राचार्य डॉ. जितेंद्र सिंह ने तकनीकी ज्ञान को भारत के विकास की आधारशिला बताया। प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।